16

भ्वादिप्रकरण में - भू धातु के लिङ्, लुङ् और लृङ् लकारों में रूप सिद्धियाँ

तिङन्त प्रकरण के पूर्व पाठों में लट् लिट् लुट्, लोट् व लङ् लकार पढ़ चुके। इस पाठ में लिङ् लुङ् व लृङ् लकार पढ़ेंगे। लिङ् के दो भाग हैं, आज्ञा अनुरोध व यांचना आदि भाषा से प्रकट किये जाते है। उसके लिए विधिलिङ् लकार का प्रयोग किया जाता है। लिङ् लकार किसी काल को प्रकट नहीं करता अपितु क्रिया में प्रेरणा का द्योतक है। आशीर्वाद अर्थ में आशीर्लिङ् प्रयुक्त होता है।

अतीत कालीन क्रिया को प्रकट करने के लिए लुङ्लकार का प्राचीनसाहित्य में प्रचुर प्रयोग हुआ है। लुङ् विकरण भेद से अनेक प्रकार का है। इस पाठ में लुङ् की साधारण प्रक्रिया प्रदर्शित की गई है। अवशिष्ट सूत्र आगे कहे जायेंगे। लुङ्लकार का अल्पप्रयोग होता है। फिर भी लोक में प्रयोगवश यहाँ उपस्थित है।

भू धातु के इन लकारों में रूप प्रदर्शित किये गये हैं। छात्र अन्य धातुओं के रूप भू धातु के समान अभ्यास करे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप -

- विधि आदि को जानेंगे;
- लिङ् के भेदों को जानेंगे;

टिप्पणियाँ

- आज्ञादि करने के लिए योग्य लकार का प्रयोग जानेंगे;
- सभी अतीतकालीन क्रियाओं के प्रकट करने के लिए लुङ् का प्रयोग जानेंगे;
- क्रिया उत्पत्ति के लिए लकार का प्रयोग जानेंगे;

विधिलिङ् लकार

16.1 विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्॥ 3.3.161

सूत्रार्थ - विधि निमन्त्रण आमन्त्रण अधीष्ट संप्रश्न प्रार्थना आदि अर्थों में लिङ् लकार हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से लिङ् लकार का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद है। विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु (7/1), लिङ् (1/1)। धातोः (5/1) प्रत्ययः (1/1) परश्च (1/1) इनका अधिकार आता है। विधिः च निमन्त्रणं च आमन्त्रणं च अधीष्टः च संप्रश्नं च प्रार्थनं च इति विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनानि, तेषु विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्ट संप्रश्नप्रार्थनेषु इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः। सूत्रार्थ होता है- विधि निमन्त्रण आमन्त्रण अधीष्ट संप्रश्न प्रार्थना आदि अर्थों में विद्यामान धातु से परे लिङ् लकार होता है।

विधि - आयु अधिकार या वर्ण से अपने से छोटे या सेवक आदि को आज्ञा देना विधि है। वक्ता के वचन से श्रोता कर्म में प्रवत्त होता है। वहाँ आज्ञा होती है उदाहरण- स्वामी सेवक से कहता है- भवान् वस्त्रं क्षालयेद्। आचार्य ने छात्र से कहा- त्वं वेदं पठेः। स्वामी ने सेवक से कहा- जलम् आनयेः। भश्त्य या सेवक के न करने पर यद्यपि पाप नहीं लगता फिर भी वह दण्ड के योग्य होता है। शास्त्रवचन प्रायः आज्ञारूप से होते है। जैसे सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्। यजेत् स्वर्गकामः।

निमन्त्रण- नियोगकरण ही निमन्त्रण है। अवश्य कर्त्तव्य प्रेरण को निमन्त्रण कहते हैं। अर्थात् ऐसी प्रेरणा जिसका पालन न किया जाये तो प्रत्यवाय (पाप) लगता हो। जैसे श्राद्धादि में किसी अन्य श्रोत्रिय भोक्ता के न मिलने पर यदि कोई ब्राह्मण अपने दोहित्र आदि को कहे कि इह भवान् भुंजीत। यदि कोई दोहित्रादि ऐसे श्राद्ध भोजन के लिए मना करेगा तो स्मृतिशास्त्रानुसार उसे पाप का भागी होना पड़ेगा।

आमन्त्रण- कामाचारानुज्ञा ही आमन्त्रण होता है। ऐसी प्रवृत्तना का नाम आमन्त्रण है। जिसमें कामचारिता होती है अर्थात् करना या न करना इच्छा पर निर्भर करता है, करने से पुण्य या न करने पर पाप नहीं होता। जैसे घर में आये अतिथि को गृहस्वामी कहता है- इह आसने उपविशेत् भवान्। परन्तु अतिथि स्वेच्छानुसार अन्यत्र बैठता है। ऐसा आचरण करने से अतिथि को पाप या अधर्म नहीं होता। इस प्रकार यहां अतिथि के प्रति आज्ञा भी नहीं है। सम्प्रति आमन्त्रण का अर्थ आह्वान भी माना जाता है। जैसे मित्र इदं फलं खादेः त्वम्। इस वाक्य में क्रिया का प्रवर्तन है। यहां खाने के लिए प्रेरणा भी है। किन्तु आज्ञा नहीं हैं। अतः न करने पर प्रत्यवाय (पाप) नहीं है, कामचार है।

अधीष्ट - सत्कारपूर्वक व्यापार ही अधीष्ट है, कोई ग्रहस्थी अपने पुत्र को गुरुकुल ले जाकर गुरु को कहता है-पुत्रम् अध्यापयेद् भवान्। यहां इस वचन से गुरु अध्यापन कार्य में प्रेरित होता है, परन्तु यहां गुरु के प्रति आज्ञा नहीं है, याच्या भी नहीं है, न करने पर पाप भी नहीं है। अर्थात् किसी बड़े गुरु आदि को सत्कारपूर्वक किसी कार्य को करने की प्रेरणा देना अधीष्ट कहलाता है।

सम्प्रश्न - विचार करके निर्धारण करना ही सम्प्रश्न है। जैसे कोई शिष्य गुरु को कहता है- किं भो व्याकरणम् अधीनीय उत शिक्षाम्। यह प्रश्न करके शिष्य निर्णय करना चाहता है। अर्थात् किसी बड़े के समीप किसी बात का सम्प्रधारण या निश्चय करना सम्प्रश्न है।

प्रार्थना- मांगने का नाम प्रार्थना है। जैसे कोई भिक्षुक कहता है- भवान् अन्नं मे द्याद्। भो भोजनं लभेय।

विधि आदि प्रथम चार अर्थों में प्रवर्तन सामान्य है। अतः वहां प्रवर्तनात्व से लिङ् अर्थ है। जैसे अनुचर प्रति जलम् आनय। इस वाक्य से अनुचर का जलानय में प्रवृत्ति होती है अतएव इस प्रकार के वाक्य प्रयोग ही यहां व्यापार है। वहां विशेषकर लोट् या लिङ् का प्रयोग होता है। यहां प्रवृत्ति प्रेरित निष्ठ और उसके अनुकूल व्यापार प्रेरक निष्ठ है, प्रेरक वाक्य प्रयोगकर्ता होता है।

उदाहरण- विधि आदि अर्थों में विद्यमान भू धातु से विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् सूत्र से कर्ता अर्थ में लिङ्, लिङ् का ङकार व इकार का अनुबन्ध लोप होकर भू+ल् इस स्थिति में प्रथमपुरुष एकवचन की विवक्षा में तिप्तस्झि ... से तिप् प्रत्यय एवं अनुबन्ध लोप होकर भू+त्। तब

16.2 यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च॥ (3.4.103)

सूत्रार्थ - परस्मैपद लिङ् को यासुट् का आगम हो और वह ङित् हो।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र यासुट् का विधान है। इस सूत्र में पांच पद है। यासुट् (1/1), परस्मैपदेषु (7/3), उदात्तः (1/1), ङित् (1/1), च अव्ययपद। लिङः यासुट् सूत्र से लिङ इस षष्ठ्यान्त पद की अनुवृत्ति है। ङ् इत् यस्य स ङित् बहुव्रीहिसमासः। परस्मैपदेषु का परस्मैपदनाम् इस षष्ठयान्तता से विपरिणाम होता है अतः सूत्रार्थ होता है - लिङ् के स्थान पर विहित परस्मैपदों को यासुट् का आगम होता है और वह उदात्त हो। यासुट् टित् होने से आद्यन्तौ टकितौ परिभाषा से आदि अवयव होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - भू+त् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से लिङ् त् के स्थान पर परस्मैपद को यासुट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर भू+यास्+त्। यास्त् समुदाय की तिङ्शत् सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा तथा कर्त्तरि शप् से शप् का आगम्, इगन्त को गुण तथा अवादि होकर भव यास्त् स्थिति बनती है। तब-

टिप्पणियाँ

16.3 लिङः स लोपोऽनन्त्यस्य॥ (7.2.79)

सूत्रार्थ - सार्वधातुक लिङ् के अनन्त्य सकार का लोप होता है।

सूत्र व्याख्या - इस विधि सूत्र से लोप का विधान है। इस सूत्र में चार पद है। लिङः (6/1), स (6/1), लोपः (1/1) अनन्त्यस्य (6/1)। न अन्त्यः अनन्त्यः, तस्य इति तत्पुरूष समासः। कदादिभ्यः सार्वधातुके सूत्र से सार्वधातुके इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृत्ति है। सार्वधातुकस्य इस षष्ट्यान्तता से विपरिणाम है। पद योजना होती है - लिङः अनन्त्यस्य आर्धधातुकस्य लिङः सस्य लोपः। सूत्रार्थ होता है- सार्वधातुकसंज्ञक जो लिङ् आदेश है, उसके अनन्त्य सकार का लोप होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व भव+यास्त् स्थिति में यास्त् अश लिङ् सार्वधातुक संज्ञक है। यास्त् में स् अन्त्य नहीं है, वह अनन्त्य है। अतः प्रकृत सूत्र से सकार का लोप प्राप्त है।

16.4 अतो येयः॥ (7.2.80)

सूत्रार्थ - अदन्त अंग से परे सार्वधातुक के अवयव यास् के स्थान पर इय् आदेश है।

सूत्रार्थ समन्वय - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। अतः या इयः यह सूत्रगत पदच्छेद है। अतः (5/1), या (लुप्तषष्ठयैकवचनान्त पद), इयः (1/1)। अंगस्यषाष्ठ्यन्त अधिकार का अंगात् इस पंचम्यन्त से विपरिणाम है। रुदादिभ्यः सार्वधातुके सूत्र से सार्वधातुके इस सप्तम्यन्त की अनुवृत्ति है। उसका सार्वधातुकस्य इसषाष्ठ्यन्तता से विपरिणाम है। इस प्रकार पद योजना होती है - अतः अंगस्य सार्वधातुकस्य या इतः।

सूत्रार्थ होता है - अदन्त अंग से पद सार्वधातुक के अवयव यास् को इय् आदेश होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व भव+यास्त् स्थिति में लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य सूत्र से सकार लोप प्राप्त किन्तु इस सूत्र से यास् को इय् होकर भव+इय्+त् स्थिति बनती है। तब-

16.5 लोपो व्योर्वलि॥ (6.1.64)

सूत्रार्थ - वल् परे हो तो वकार एवं यकार का लोप हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। लोपः व्योः वलि सूत्रगत पदच्छेद है। लोपः (1/1), व्योः (6/2) वलि (7/1)। व् च य् व्यौ, तयोः व्योः इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः। सूत्रार्थ होता है - वल् परे होने पर वकार एवं यकार का लोप होता है।

उदाहरण - पूर्व भव+इय्+त् स्थिति में वल् तकार परे होने से प्रकृत सूत्र से यकार का लोप होकर भव+इ+त् तथा आद्गुणः से गुण होकर भवेत् रूप सिद्ध होता है।

भवेताम्- विधि आदि अर्थों में विद्यमान भू धातु से विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् सूत्र से कर्ता अर्थ में लिङ्,लिङ् का ङकार व इकार का अनुबन्ध लोप होकर भू+ल् इस स्थिति में प्रथमपुरुष द्विवचन की विवक्षा में तिप्तसझि ... से तस् प्रत्यय होकर भू+तस्। तस्थस्थमिपां तान्मन्ताम: सूत्र से तस् के स्थान सर्वादेश ताम्, भू+ताम्, लिङ् तस् के स्थान पर विहित ताम् परस्मैपद को यासुट् आगम एव अनुबन्ध लोप होकर भू+यास्ताम् यास्त् समुदाय की तिङ्शत् सार्वधातुकम् से सार्वधातुक संज्ञा तथा कर्त्तरि शप् से शप् का आगम्, इगन्त को गुण तथा अवादि होकर भव+ यास्ताम् स्थिति बनती है। यास्ताम् अश लिङ् सार्वधातुक संज्ञक है। यास्त् में स् अन्त्य नहीं है, वह अनन्त्य है। अत: लिङ: सलोपोऽनन्त्यस्य सूत्र से सकार का लोप प्राप्त किन्तु अतो येय: सूत्र से यास् को इय् होकर भव+इय्+ताम् स्थिति बनती है तब लोपो व्योर्वलि सूत्र से यकार का लोप होकर भव+इ+त् तथा आद्गुण: से गुण होकर भवेताम् रूप सिद्ध होता है।

16.6 झेर्जुस्॥ (3.4.108)

सूत्रार्थ - लिङ् के झि के स्थान पर जुस् आदेश हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इसमें दो पद है। झे: (6/1) जुस् (1/1)। लिङ: यासुट् सूत्र से लिङ: इस षष्ठ्यान्त पद की अनुवृत्ति है। वाक्य योजना होती है - लिङ: झे: जुस्। सूत्रार्थ होता है- लिङ् के झि के स्थान पर जुस् आदेश होता है। अर्थात् लिङ् के स्थान पर विहित जो झि प्रत्यय है, उसके स्थान पर जुस् आदेश होता है। जुस् प्रयोगोत्तर स्थानिवद् भाव से प्रत्ययत्व को प्राप्त होता है। तब चुट् से जुस् के ज् की इत्संज्ञा, तस्य लोप: से लोप तथा अनेकाल् होने से अनेकाल्शित् सर्वस्य परिभाषा से सम्पूर्ण झि को जुस् होता है।

उदाहरण - भवेयु:

सूत्रार्थ समन्वय - विधि आदि अर्थों में भू धातु से कर्ता अर्थ में लिङ् तथा अनुबन्ध लोप होकर भू+ल्। प्रथमपुरूषबहुवचन की विवक्षा में तिप्तस्झि ... सूत्र से झि प्रत्यय भू+झि। झेर्जुस् सूत्र से झि को जुस् आदेश भू+जुस्, अनुबन्धलोप, यासुट् आगम् होकर भू+यास्+उस्, कर्तरिशत् से शप् आगम, अनुबन्धलोप, अतो येय: से यास् को इय् आदेश होकर भू+इय्+उस्, इगन्त भू को गुण एवं अवादि होकर भव+इय्+उस्, आद्गुण: से गुण होकर तथा स् को रूत्व एवं विसर्ग होकर भवेयु: रूप सिद्ध होता है।

भवे: - विधि आदि अर्थों में भू धातु से कर्ता अर्थ में लिङ् तथा अनुबन्ध लोप होकर भू+ल्। मध्यमपुरूष एकवचन की विवक्षा में तिप्तस्झि ... सूत्र से सिप् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप भू+सि। इतश्च सूत्र से सि का इकार लोप भू+स् अनुबन्धलोप, यासुट् आगम् होकर भू+यास्+स्, कर्तरिशत् से शप् आगम, अनुबन्धलोप, अतो येय: से यास् को इय् आदेश होकर भू+इय्+स्, इगन्त भू को गुण एवं अवादि होकर भव+इय्+उस्, लोपो व्योर्वलि सूत्र से यकार का लोप, आद्गुण: से गुण होकर तथा स् को रूत्व एवं विसर्ग होकर भवे: रूप सिद्ध होता है।

टिप्पणियाँ

भवेतम् - विधि आदि अर्थों में भू धातु से कर्ता अर्थ में लिङ् तथा अनुबन्ध लोप होकर भू+ल्। मध्यमपुरूष द्विवचन की विवक्षा में तिप्तस्झि ... सूत्र से थस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप भू+सि। तस्थस्थमिपां तान्मन्ताम: सूत्र से थस् के स्थान सर्वादेश तम्, यासुट् आगम् होकर भू+यास्+तम्, कर्तरिशत् से शप् आगम, अनुबन्धलोप, अतो येय: से यास् को इय् आदेश होकर भू+इय्+तम्, इगन्त भू को गुण एवं अवादि होकर भव+इय्+तम्, लोपो व्योर्वलि सूत्र से यकार का लोप, आद्गुण: से गुण होकर भवेतम् रूप सिद्ध होता है।

भवेत - विधि आदि अर्थों में भू धातु से कर्ता अर्थ में लिङ् तथा अनुबन्ध लोप होकर भू+ल्। मध्यमपुरूष बहुवचन की विवक्षा में तिप्तस्झि ... सूत्र से थ प्रत्यय, तस्थस्थमिपां तान्मन्ताम: सूत्र से थ के स्थान सर्वादेश त, यासुट् आगम् होकर भू+यास्+त, कर्तरिशत् से शप् आगम, अनुबन्धलोप, अतो येय: से यास् को इय् आदेश होकर भू+इय्+त, इगन्त भू को गुण एवं अवादि होकर भव+इय्+त, लोपो व्योर्वलि सूत्र से यकार का लोप, आद्गुण: से गुण होकर भवेत रूप सिद्ध होता है।

भवेयम् - विधि आदि अर्थों में भू धातु से कर्ता अर्थ में लिङ् तथा अनुबन्ध लोप होकर भू+ल्। उत्तमपुरूष एकवचन की विवक्षा में तिप्तस्झि ... सूत्र से मिप् प्रत्यय, तस्थस्थमिपां तान्मन्ताम: सूत्र से मिप् के स्थान सर्वादेश अम्, यासुट् आगम् होकर भू+यास्+अम्, कर्तरिशत् से शप् आगम, अनुबन्धलोप, अतो येय: से यास् को इय् आदेश होकर भू+इय्+अम्, इगन्त भू को गुण एवं अवादि होकर भव+इय्+अम्, आद्गुण: से गुण होकर भवेयम् रूप सिद्ध होता है।

भवेव, भवेम- विधि आदि अर्थों में भू धातु से कर्ता अर्थ में उत्तम पुरूष द्विवचन में वस् एवं बहुवचन में मस् प्रत्यय, यासुट् आगम् कर्तरिशत् से शप् आगम, अनुबन्धलोप, अतो येय: से यास् को इय् आदेश होकर, इगन्त भू को गुण एवं अवादि होकर, आद्गुण: से गुण, नित्यं ङित: से सकार लोप होकर भवेव,भवेम रूप सिद्ध होता है।

भू धातु के विधिलिङ् लकार के रूप

विधिलिङ्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	भवेत्	भवेताम्	भवेयु:
मध्यपुरुष:	भवे:	भवेतम्	भवेत
उत्तमपुरुष:	भवेयम्	भवेव	भवेम

नीचे कुछ धातुएँ दी गई हैं, उनका रूप इन्हीं के समान कुछ सूत्रों का प्रयोग करके सिद्ध कर सकते हैं।

1. **पठ व्यक्तायां वाचि** - भवेत्, भवेताम्, भवेयु:। भवे:, भवेतम्, भवेत। भवेयम्, भवेव, भवेम।
2. **गद व्यक्तायां वाचि** - गदेत्, गदेताम्, गदेयु:। गदे:, गदेतम्, गदेत। गदेयम्, गदेव, गदेम।
3. **अर्च पूजायाम्** - अर्चेत्, अर्चेताम्, अर्चेयु:। अर्चे:, अर्चेतम्, अर्चेत। अर्चेयम्, अर्चेव, अर्चेम।
4. **व्रज गतौ** - व्रजेत्, व्रजेताम्, व्रजेयु:। व्रजे:, व्रजेतम्, व्रजेत। व्रजेयम्, व्रजेव, व्रजेम।

5. **कटें वर्षावरणयोः** - कटेत्, कटेताम्, कटेयुः। कटेः, कटेतम्, कटेत। कटेयम्, कटेव, कटेम।
6. **क्षि क्षये** - क्षयेत्, क्षयेताम्, क्षयेयुः। क्षयेः, क्षयेतम्, क्षयेत। क्षयेयम्, क्षयेव, क्षयेम।
7. **चितीं संज्ञाने** - चेतेत्, चेतेताम्, चेतेयुः। चेतेः, चेतेतम्, चेतेत। चेतेयम्, चेतेव, चेतेम।
8. **तप सन्तापे** - तपेत्, तपेताम्, तपेयुः। तपेः, तपेतम्, तपेत। तपेयम्, तपेव, तपेम।
9. **शुच शोके** - शोचेत्, शोचेताम्, शोचेयुः। शोचेः, शोचेतम्, शोचेत। शोचेयम्, शोचेव, शोचेम।

पाठगत प्रश्न 16.1

1. विधि क्या है?
2. निमन्त्रण क्या है?
3. आमन्त्रण क्या है?
4. अधीष्ट क्या है?
5. संप्रश्न क्या है?
6. लिङ् किन अर्थो होता है?
7. अतो येयः सूत्र से किस के स्थान पर क्या होता है?
8. झेर्जुस् कहाँ होता है?
9. यासुट् क्या होता है?

   (अ) प्रत्ययः (ब) आगम (स) आदेश (द) अंग
10. इतश्च का उदाहरण क्या है?

    (अ) भवेः (ब) भवेताम् (स) भवेयुः (द) भवेयम्
11. यासुट् कहाँ होता है?

    (अ) परस्मैपद में (ब) आत्मनेपद में (स) अंग में (द) विकरण में

भू धातु आशीर्लिङ् रूप

आशिषि लिङ्लौटौ सूत्र से आशिष् अर्थ में भू धातु लिङ् में प्रथमपुरूष एकवचन की विवक्षा में तिप् प्रत्यय, इतश्च सूत्र से ति के इकार का लोप, लिङाशिषि सूत्र से आर्धधातुक संज्ञा, यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च सूत्र से यासुट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर भू+यास्+त्। स्कोः संयोगाद्योरन्ते

टिप्पणियाँ

च सूत्र से पदान्त में स्थित स्त् संयोग के आदि सकार का लोप होकर भू या त्। इस स्थिति में आर्धधातुक होने से सार्वधातुकार्धधातुकयोः से इगन्त अंग इक् के ऊकार का गुण प्राप्त। तब-

(सूत्र-स्कोः संयोगाद्योरन्ते च-पद के अन्त में जो संयोग है, झल् परे रहते संयोग के आदि सकार का लोप होता है।)

16.7 किदाशिषि॥ (3.4.104)

सूत्रार्थ - आशिष में लिङ् कित् होता है।

सूत्र व्याख्या - यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र से यासुट् कित् होता है। इस सूत्र में दो पद है। कित् (1/1) आशिषि (7/1)। लिङः सीयुट् से लिङः इसषाष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति है। यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च सूत्र से यासुट् इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति है। पदयोजना - आशिषि लिङः यासुट् कित्। सूत्रार्थ होता है - आशीर्वाद अर्थ में विहित लिङ् का यासुट् कित् होवें।।

16.8 क्ङिति च॥ (1.1.5)

सूत्रार्थ - गित्, कित्, ङित् को मान कर इग्लक्षण गुण अथवा वृद्धि नहीं होंवे।

सूत्र व्याख्या - यह निषेध सूत्र है। इस सूत्र से गुणवृद्धि निषेध किया जाता है। इस सूत्र में दो पद है। क्ङिति (7/1) यहाँ निमित्त सप्तमी है, च (अव्ययपद) है। इको गुणवृद्धि इस समग्र सूत्र की अनुवृत्ति है। इकः यह षष्ठ्यन्त पद है। गुणवृद्धी प्रथमाद्विवचनान्त पद है। न धातुलोप अर्थधातुके सूत्र से न (अव्ययपद) की अनुवृत्ति है। ग् च क् च ङ् च इति क्ङ इति इतरेतरयोगद्वन्द्व समासः। क्ङ इतः यस्य स क्ङित् तस्मिन् क्ङिति इति बहुव्रीहिसमासः। गुणश्च वृद्धिश्च इति गुणवृद्धी इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः। पदयोजना - क्ङिति इकः गुणवृद्धी न च। सूत्रार्थ होता है - गित्, कित्, ङित् मानकर इग्लक्षण गुण व वृद्धि नहीं होती। इको गुणवृद्धी परिभाषा से यहां इकःषाष्ठ्यन्त पद उपस्थापित है। वहां प्राप्त गुणवृद्धि इग्लक्षण में कही जाती है। जिस निमित्त से इग्लक्षण में गुण वृद्धि प्राप्त होती है उस निमित्त को यदि गित् कित् ङित् हो तो गुणवृद्धि का निषेध किया जाता है।

उदाहरण - भूयात्

सूत्रार्थ समन्वय - भू यात् स्थिति में आर्धधातुकत्व से गुण प्राप्त। यहां किदाशिषि सूत्र से यासुट् कित् होता है। यहां इग्लक्षण गुण प्राप्त किन्तु उसका निमित्त यात् कित् है। अतः क्ङिति च सूत्र से गुण निषेध होता है। अत भूयात् रूप सिद्ध होता है।

भूयास्ताम्- आशिषि लिङ्लोटौ सूत्र से आशिष् अर्थ में भू धातु लिङ् में प्रथमपुरूष द्विवचन की विवक्षा में तस् प्रत्यय, तस् को ताम् आदेश की लिङाशिषि सूत्र से आर्धधातुक संज्ञा, यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च सूत्र से यासुट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर भू+यास्+ताम्। इस स्थिति में आर्धधातुक होने से सार्वधातुकार्धधातुकयोः से इगन्त अंग इक् के ऊकार का गुण प्राप्त। तब

यहां किदाशिषि सूत्र से यासुट् कित् होता है। यहां इग्लक्षण गुण प्राप्त किन्तु उसका निमित्त यास्ताम् कित् है। अतः क्ङिति च सूत्र से गुण निषेध होता है। अतः भूयास्ताम् रूप सिद्ध होता है।

भूयासुः - आशिषि लिङ्लोटौ सूत्र से आशिष् अर्थ में भू धातु लिङ् में प्रथमपुरूष बहुवचन की विवक्षा में झि प्रत्यय, झेर्जुस् से झि को जुस् आदेश, अनुबन्ध लोप, लिङाशिषि सूत्र से आर्धधातुक संज्ञा, यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च सूत्र से यासुट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर भू+यास्+उस्। इस स्थिति में आर्धधातुक होने से सार्वधातुकार्धधातुकयोः से इगन्त अंग इक् के ऊकार का गुण प्राप्त। तब यहां किदाशिषि सूत्र से यासुट् कित् होता है। यहां इग्लक्षण गुण प्राप्त किन्तु उसका निमित्त यासुस् कित् है। अतः क्ङिति च सूत्र से गुण निषेध होता है। अतः भूयासुः रूप सिद्ध होता है।

भूयाः - आशिषि लिङ्लोटौ सूत्र से आशिष् अर्थ में भू धातु लिङ् में मध्यमपुरूष एकवचन की विवक्षा में सिप् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप, इतश्च से इकार लोप, लिङाशिषि सूत्र से आर्धधातुक संज्ञा, यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च सूत्र से यासुट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर भू+यास्+स्। स्कोः संयोगाद्योरन्ते च सूत्र से पदान्त में स्थित स्स् संयोग के आदि सकार का लोप होकर भू या स् इस स्थिति में आर्धधातुक होने से सार्वधातुकार्धधातुकयोः से इगन्त अंग इक् के ऊकार का गुण प्राप्त। तब यहां किदाशिषि सूत्र से यासुट् कित् होता है। यहां इग्लक्षण गुण प्राप्त किन्तु उसका निमित्त यासुट् कित् है। अतः क्ङिति च सूत्र से गुण निषेध होता है सकार को रुत्व एव विसर्ग होकर भूयाः रूप सिद्ध होता है।

भूयास्तम् - मध्यमपुरूष द्विवचन की विवक्षा में थस् प्रत्यय, थस् को तम् आदेश, यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च सूत्र से यासुट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर भू+यास्+तम्। इग्लक्षण गुण प्राप्त किन्तु उसका निमित्त यास्तम् कित् होने से गुणनिषेध होकर भूयास्तम् रूप सिद्ध होता है।

भूयास्त - मध्यमपुरूष बहुवचन की विवक्षा में थ प्रत्यय, थस् को त आदेश, यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च सूत्र से यासुट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर भू+यास्+त। इग्लक्षण गुण प्राप्त किन्तु उसका निमित्त यास्त कित् होने से गुणनिषेध होकर भूयास्त रूप सिद्ध होता है।

भूयासम् - उत्तमपुरूष एकवचन की विवक्षा में मिप् प्रत्यय, मिप् को अम् आदेश, यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च सूत्र से यासुट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर भू+यास्+अम्। इग्लक्षण गुण प्राप्त किन्तु उसका निमित्त यासम् कित् होने से गुणनिषेध होकर भूयासम् रूप सिद्ध होता है।

भूयास्व - उत्तमपुरूष द्विवचन की विवक्षा में वस् प्रत्यय, नित्यं ङितः से सकार लोप, यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च सूत्र से यासुट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर भू+यास्+व। इग्लक्षण गुण प्राप्त किन्तु उसका निमित्त यास्व कित् होने से गुणनिषेध होकर भूयास्व रूप सिद्ध होता है।

भूयास्म - उत्तमपुरूष द्विवचन की विवक्षा में मस् प्रत्यय, नित्यं ङितः से सकार लोप, यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च सूत्र से यासुट् का आगम, अनुबन्ध लोप होकर भू+यास्+म। इग्लक्षण गुण प्राप्त किन्तु उसका निमित्त यास्म कित् होने से गुणनिषेध होकर भूयास्व रूप सिद्ध होता है।

भू धातु के आशीर्लिङ् लकार के रूप

आशीर्लिङ्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
मध्यपुरुषः	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
उत्तमपुरुषः	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

पाठगत प्रश्न 16.2

1. यासुट् किस सूत्र से होता है?
2. यासुट् कहाँ होता है?
3. अतो येयः कहाँ नहीं होता है,?
4. आशीष् में तिङ् की आर्धधातुक संज्ञा किस सूत्र से होती है,?
5. लिङाशिषि सूत्र से क्या होता है?
6. इतश्च का उदाहरण क्या है?

   (अ) भूयात् (ब) भूयास्ताम् (स) भूयासुः (द) भूयास्त
7. भूयात् को आर्धधातुक होने से गुण निषेध का कारण क्या है?

   (अ) यासुट् कित् होने से (ब) यासुट् ङित् होने से

   (स) यासुट् पित् होने से (द) यासुट् सेट् होने से
8. आशीष् में भू धातु का उदाहरण नहीं है?

   (अ) भूयाः (ब) भूयास्व (स) भूयासुः (द) भवतात्
9. आशीष् में भू धातु का उदाहरण नहीं है?

   (अ) भूयासुः (ब) भुयासुः (स) भूयासूः (द) भूयासूः

भू धातु - लुङ् लकार में रूप

16.9 लुङ्॥ (3.2.110)

सूत्रार्थ - भूतार्थ में धातु से लुङ् हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है इस सूत्र से लुङ् का विधान है। इस सूत्र में लुङ् एक ही प्रथमैकवचनान्त पद है। भूते (7/1), धातोः (5/1) प्रत्ययः (1/1), परश्च (1/1) का अधिकार

आता है। सूत्रार्थ होता है- भूतकाल अर्थ में धातु से परे लुङ् प्रत्यय होता है। अनद्यतन परोक्ष भूत में लिट् अनद्यतन भूत में लङ् और भूतकाल में लुङ् की व्यवस्था होती है।

उदाहरण - अभूत्

सूत्रार्थ समन्वय - भू धातु से भूतकाल की विवक्षा में लुङ् सूत्र से कर्ता अर्थ में लुङ् प्रत्यय तथा ङकार एवं उकार की इत् संज्ञा तथा लोप होकर भू+ल् इस स्थिति में प्रथमपुरूषैकवचन की विवक्षा में तिप् अनुबन्ध लोप होकर भू+ति, इतश्च से ति के इकार का लोप भू+त्। तिङ्शित् सार्वधातुकम् सूत्र से सार्वधातुक संज्ञा तथा कर्त्तरिशप् से शप् का आगम् प्राप्त। तब-

16.10 च्लि लुङि॥ (3.1.43)

सूत्रार्थ - लुङ् परे धातु से परे च्लि प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से च्लि का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद है। च्लि (1/1), लिङि (7/1)। धातोः (5/1), प्रत्ययः (1/1) परश्च (1/1) का अधिकार आता है। सूत्रार्थ होता है - लुङ् परे रहते धातु में परे च्लि प्रत्यय होता है। च्लि प्रत्यय का इकार उच्चारणार्थ है चकार की चुटू से इत्संज्ञा। च्लि प्रत्यय शप् आदि का अपवाद है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व में भू+त् स्थिति में शप् प्राप्त किन्तु च्लि लुङि सूत्र से च्लि प्रत्यय होकर भू+च्लि+त् स्थिति बनती है। तब

16.11 च्लेः सिच्॥ (3.1.44)

सूत्रार्थ - च्लि के स्थान पर सिच् हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से सिच् होता है। इस में दो पद है। च्लेः (6/1) सिच् (1/1)। च्लि लुङि से लुङि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृत्ति है। धातोः (5/1) प्रत्ययः (1/1), परश्च (1/1) का अधिकार आता है। सूत्रार्थ होता है - लुङ् में धातु से परे च्लि के स्थान पर सिच् प्रत्यय होता है। सिच् के चकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा तथा इकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् से इत् संज्ञा तथा दोनों का लोप होकर सकार शेष रहता है।

(च्लि के स्थान पर जैसा सिच् वैसे ही अङ् चङ् तथा क्स इत्यादि होते है।)

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - भू+च्लि+त् इस स्थिति में प्रकृत सूत्र से सिच् होकर भू+स्+त् तथा लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वदात्त सूत्र से अंग को अट् का आगम होकर अ+भू स्+त् स्थिति बनती है। तब-

16.12 गाति-स्था-घु-पा-भूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु॥ (2.8.77)

सूत्रार्थ - गाति, स्था, घु, पा, तथा भू धातु से परे सिच् का लोप हो यदि परस्मैपद परे हो तो।

सूत्रव्याख्या -यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से लुक् का विधान है। गाति स्था घु पा भूभ्यः (5/3), सिचः (6/1) परस्मैपदेषु (7/3)। ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञोः सूत्र से लुक् इस प्रथमान्त पद

टिप्पणियाँ

की अनुवृत्ति होती है। गातिः च स्थाः घुः च पाः च भूः च गातिस्थाघुपाभुवः इति इतरेतरयोग द्वन्द्वसमासः। तेभ्यः गातिस्थाघुपाभूभ्यः। सूत्रार्थ होता है - परस्मैपद प्रत्यय परे हो तो, गा, स्था, घु, पा, भू इन धातु से परे सिच् का लुक् हो जाता है। इणो गा लुङि सूत्र से इण् धातु को गा आदेश होता है। यहाँ पर इस धातु से ही अभिप्राय है। पा पाने और रक्षणे दो धातु हैं, इनमें पाने अर्थक ही ग्राह्य है। दाधाघ्वदाप् सूत्र से दारूप और धारूप धातुओं की घु संज्ञा होती है। उनमें व डुदाञ् दाने, डुधाञ् धारणपोषणयोः इन दोनों का ग्रहण है।

विशेष - प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः सूत्र से प्रत्यय के अदर्शन की लुक् संज्ञा होती है। यहां सिच् प्रत्यय है। अतः सिच् समग्र प्रत्यय का लुक् होता है। इसलिए अलोऽन्त्यस्य परिभाषा प्रवृत्त नहीं होती।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व में अभू+स्+त् इस स्थिति में गाति स्थाघुपाभूभ्यः सिच् परस्मैपदेषु सूत्र से सिच् का लुक् होकर अभूत् स्थिति बनती है। सार्वधातुकाऽऽर्धधातुकयोः से इगन्त को गुण प्राप्त है। तब-

16.13 भूसुवोस्तिङि॥ (7.3.88)

सूत्रार्थ-सार्वधातुक तिङ् परे हो तो भू एवं सू धातु को गुण नहीं होता है।

सूत्रव्याख्या - यह निषेध सूत्र है इससे गुण का निषेध किया जाता है। इस में दो पद है। भूसुवोः तिङि यह सूत्रगतपदच्छेद है। भूसूवोः (6/2) तिङि (7/1)। नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके सूत्र से न अव्ययपद की अनुवृत्ति है। सार्वधातुके इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृत्ति है। मिदेर्गुणः सूत्र से गुणः इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति है। भूः च सूः च भूसूवौ, तयोः भूसूवोः इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः। भू सत्तायाम् तथाषूञ् प्राणिगर्भविमोचने ये दो धातु अभिमत है। सूत्रार्थ होता है - भू एवं सू इन दो धातुओं से सार्वधातुक तिङ् परे हो तो गुण नहीं होता। यहाँ गुण इस पद से गुण नहीं का विधान किया जाता है। अतः इको गुणवृद्धी की परिभाषा प्रवृत्त नहीं होती।

उदाहरण - अभूत्

सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व में अभू+त् स्थिति में गुण प्राप्त था प्रकृत सूत्र से गुण का निषेध होकर अभूत् रूप सिद्ध होता है।

अभूताम् -भू धातु से लुङ् सूत्र से भूतकाल में लुङ। प्रथमपुरूषद्विवचन की विवक्षा में तस् प्रत्यय होकर भू+तस्। यहां तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः सूत्र से तस् को ताम् सर्वादेश होकर भू+ताम्। लुङ् परे होने से च्लि लुङि सूत्र से च्लि प्रत्यय, तथा च्लेः सिच् से च्लि के स्थान पर सिच् एवं अनुबन्ध लोप होकर भू+स्+ताम् स्थिति में गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु सूत्र से सिच् का लोप होकर भू+ताम् यहां सार्वधातुकार्धधातुकयोः से इगन्त को गुण प्राप्त। तब-

16.14 सार्वधातुकमपित्॥ (1.2.4)

सूत्रार्थ - अपित् सार्वधातुक ङिद्वत् होता है।

सूत्रव्याख्या - इस अतिदेश सूत्र से ङिद्वत् अतिदेश किया जाता है। इस सूत्र में दो पद है। सार्वधातुकम् (1/1) अपित् (1/1)। गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् सूत्र से ङित् इस प्रथमान्त की अनुवृत्ति होती है। प् इत् यस्य स पित्, न पित् अपित् इति बहुवीहिगर्भ नञ् तत्पुरुषसमासः। ङ् इत् यस्य स ङित्। सूत्रार्थ होता है अपित् सार्वधातुक ङित् वत् होता है। अर्थात् पित् भिन्न सार्वधातुक ङित्वत् होता है। जिस के पकार की इत् संज्ञा नहीं होती उस सार्वधातुक के ङकार इत् के समान है।

सूत्रार्थ समन्वय - पर्वू में भू+ताम् स्थिति में इग्लक्षण गुण प्राप्त में ताम् तस् के स्थान पर आदेश हुआ है। तस् पित् नहीं है अत वह अपित् है। उसके स्थान पर आदेश हुआ ताम् भी इस सूत्र से ङित्वत् हुआ। ङित् होने से क्ङिति च सूत्र इग्लक्षण गुण का निषेध हो जाता है। लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः सूत्र से अंग को अट् का आगम होकर अभूताम् रूप सिद्ध होता है।

अभूवन् - भू धातु से लुङ् सूत्र से भूतकाल में लुङ। प्रथमपुरूषबहुवचन की विवक्षा में झि प्रत्यय होकर भू+झि। यहां च्लि लुङि सूत्र से च्लि प्रत्यय, तथा च्लेः सिच् से च्लि के स्थान पर सिच् एवं अनुबन्ध लोप होकर भू+स्+झि स्थिति में गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु सूत्र से सिच् का लोप होकर भू+झि यहां लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः सूत्र से अंग को अट् का आगम होकर अभू झि। तब झोऽन्तः सूत्र से अन्त् आदेश, अभू अन्ति, इतश्च से इकार लोप, संयोगान्तस्य लोपः से तकार लोप, अभू अन्, भुवो वग् लुङ्लिटोः सूत्र से वुक् का आगम अनुबन्ध लोप होकर अभूवन् रूप सिद्ध होता है।

अभूः - भू धातु से लुङ् सूत्र से भूतकाल में लुङ। मध्मपुरूष एकवचन की विवक्षा में सिप् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप होकर भू+सि। यहां च्लि लुङि सूत्र से च्लि प्रत्यय, तथा च्लेः सिच् से च्लि के स्थान पर सिच् एवं अनुबन्ध लोप होकर भू+स्+सि स्थिति में गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु सूत्र से सिच् का लोप होकर भू+सि यहां लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः सूत्र से अंग को अट् का आगम होकर अभू सि। तब इतश्च से इकार लोप, अभूस्, सिप् सार्वधाधतुक होने से गुण प्राप्त किन्तु भूसुवोस्तिङि से गुण निषेध, सकार को रुत्व विसर्ग होकर अभूः रूप सिद्ध होता है।

अभूतम् - भू धातु से लुङ् सूत्र से भूतकाल में लुङ। मध्मपुरूष द्विवचन की विवक्षा में थस् प्रत्यय, तस्थस्थमिपां तान्मन्तामः सूत्र से थस् के स्थान सर्वादेश तम्, भू+तम्। यहां च्लि लुङि सूत्र से च्लि प्रत्यय, तथा च्लेः सिच् से च्लि के स्थान पर सिच् एवं अनुबन्ध लोप होकर भू+स्+तम् स्थिति में गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु सूत्र से सिच् का लोप होकर भू+तम् यहां लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः सूत्र से अंग को अट् का आगम होकर अभू तम्। तब सार्वधाधतुक होने से गुण प्राप्त किन्तु तम् अपित् होने से गुण निषेध होकर अभूतम् रूप सिद्ध होता है।

अभूत - मध्मपुरूष बहुवचन की विवक्षा में थ प्रत्यय, तस्थस्थमिपां तान्मन्तामः सूत्र से थ के स्थान सर्वादेश त, भू+त। यहां च्लि लुङि सूत्र से च्लि प्रत्यय, तथा च्लेः सिच् से च्लि के स्थान पर सिच् एवं अनुबन्ध लोप होकर भू+स्+त स्थिति में गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु सूत्र से सिच् का लोप होकर भू+त यहां लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः सूत्र से अंग को अट् का आगम होकर अभू त। तब सार्वधाधतुक होने से गुण प्राप्त किन्तु तम अपित् होने से गुण निषेध होकर अभूत रूप सिद्ध होता है।

टिप्पणियाँ

अभूवम् - उत्तमपुरूष एकवचन की विवक्षा में मिप् प्रत्यय, तस्थस्थमिपां तान्मन्ताम: सूत्र से अम् के स्थान सर्वादेश अम्, भू+त। यहां च्लि लुङि सूत्र से च्लि प्रत्यय, तथा च्ले: सिच् से च्लि के स्थान पर सिच् एवं गातिस्थाघुपाभूभ्य: सिच: परस्मैपदेषु सूत्र से सिच् का लोप होकर भू+अम् यहां लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्त: सूत्र से अंग को अट् का आगम होकर अभू अम्। तब भुवो वग् लुङ्लिटो: सूत्र से वुक् का आगम अनुबन्ध लोप होकर अभूवम् रूप सिद्ध होता है।

अभूव - उत्तमपुरूष द्विवचन की विवक्षा में वस् प्रत्यय, नित्यं ङित: से सकार लोप, यहां च्लि प्रत्यय, तथा च्लि के स्थान पर सिच् एवं गातिस्थाघुपाभूभ्य: सिच: परस्मैपदेषु सूत्र से सिच् का लोप होकर भू+व यहां लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्त: सूत्र से अंग को अट् का आगम होकर अभू व। यहां इग्लक्षण का निषेध होकर अभूव रूप सिद्ध होता है।

अभूम - उत्तमपुरूष बहुवचन की विवक्षा में मस् प्रत्यय, नित्यं ङित: से सकार लोप, यहां च्लि प्रत्यय, तथा च्लि के स्थान पर सिच् एवं गातिस्थाघुपाभूभ्य: सिच: परस्मैपदेषु सूत्र से सिच् का लोप होकर भू+म यहां लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्त: सूत्र से अंग को अट् का आगम होकर अभू म। यहा इग्लक्षण का निषेध होकर अभूम रूप सिद्ध होता है।

भू धातु के लुङ् लकार के रूप

लुङ्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
मध्यपुरुष:	अभू:	अभूतम्	अभूत
उत्तमपुरुष:	अभूवम्	अभूव	अभूम

16.15 न माङ्योगे॥ (6.4.74)

सूत्रार्थ - माङ् के योग में अंग को अट् या आट् का आगम नहीं होता।

सूत्र व्याख्या - यह निषेध सूत्र है। इस सूत्र से अट् एवं आट् के आगम का निषेध किया जाता है। इसमें दो पद है। लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्त: से अट् इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। आडजादीनाम् इस सूत्र से आट् इस प्रथमान्त पद की अनुवृत्ति होती है। अंगस्य (6/1) का अधिकार है। माङोयोग: माङ्योग:। तस्मिन् माङ्योगे। सूत्रार्थ होता है - माङ् के योग में अंग को अट् एवं आट् दोनों नहीं होते।

उदाहरण - मा भवान् प्रमादं कार्षीत्।

16.16 माङि लुङ्॥ (3.3.179)

सूत्रार्थ - माङ् शब्द के उपपद रहते धातु से लुङ् प्रत्यय हो। यह सब लकारों का अपवाद है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से लुङ् का विधान है। इस सूत्र में दो पद है। माङ् (7/1) लुङ् (1/1)। यहा धातोः (5/1), प्रत्ययः (1/1) और परश्च (1/1) का अधिकार आता है। सूत्रार्थ होता है - माङ् उपपद होने पर धातु से परे लुङ् प्रत्यय होता है यह सभी लकारों का अपवाद है। अर्थात् माङ् निषेधार्थक अव्यय है। जिस क्रिया का करना चाहे उस वाचक धातु से परे लुङ् का विधान हो। यह लुङ् अन्य सभी लकार का जो अर्थ है उसी अर्थ में इसका प्रयोग होता है। न केवल भूतकाल में।

उदाहरण - मा भवान् प्रसादं कार्षीत्।

सूत्रार्थ समन्वय -कृ धातु से लुङ्, लुङ् के स्थान पर तिप् में अकार्षीत् रूप होता है। माङ् का ङ्कार हलन्त्यय से इत् संज्ञक तथा तस्य लोपः से लोप होता है। न माङ्योगे सूत्र से अट् आट् नहीं होते। अतः कार्षीत् रूप में अट् नहीं दिखाई देता। यहां प्रमादकरण का निषेध है। विवक्षानुसार इसे सभी कालों व प्रकारों में कह सकते हैं।

16.17 स्मोत्तरे लङ् च॥ (3.3.176)

सूत्रार्थ - यदि माङ् के योग मे स्म लगा हो तो लङ् एवं लुङ् दोनों का प्रयोग होता है।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से लङ् एवं लुङ् का विधान होता है। इस सूत्र में तीन पद है। स्मोत्तरे (7/1), लङ् (1/1), च अव्ययपद। माङिलुङ् सूत्र से लुङ् इस प्रथमान्त की अनुवृत्ति है। यहां धातोः (5/1) प्रत्ययः (1/1) और परश्च (1/1) का अधिकार आता है। स्मः उत्तरः परः यस्मात् स स्मोत्तरः इति बहुव्रीहिसमासः। सूत्रार्थ होता है - निषेधार्थक माङ् से परे स्म का प्रयोग यदि किया जाये तो जिस क्रिया का निषेध करना चाहे, उस से परे लङ् एवं लुङ् प्रत्यय होते है।

उदाहरण - मा स्म भवान् भूत्। मा स्म भवत्।

सूत्रार्थ समन्वय - मा स्म भवान् भूत इस उदाहरण में भू धातु से लुङ् में अभूत् रूप बनता है। न माङ् योगे सूत्र से अट् नहीं होता अतः भूत् रूप में अट् नहीं दिखाई देता।

मा स्म भवत् उदाहरण में भू धातु से लङ् में अभवत् रूप बनता है। किन्तु न माङ् योगे सूत्र से अट् नही होता है। अतः भवत् रूप दिखाई देता है।

भू धातु लृङ् लकार में रूप

16.18 लिङ् निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ॥ (3.3.139)

सूत्रार्थ - हेतु-हेतुमद्भाव आदि जो लिङ् के निमित्त कहे गये है, उन में यदि भविष्यत्कालिक क्रिया कही जाये तो धातु से परे लृङ् प्रत्यय होता है। क्रिया की अनिष्पति (असि( ) गम्यमान हो तो।

टिप्पणियाँ

भ्वादिप्रकरण में - भू धातु के लिङ्, लुङ् और लृङ् लकारों में रूप सिद्धियाँ

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से लृङ् का विधान है। इस सूत्र में तीन पद है। लिङ्निमित्ते (7/1), लृङ् (1/1), क्रियातिपतौ (7/1)। भविष्यति मर्यादा वचनेऽवरस्मिन् सूत्र से भविष्यति (7/1) पद की अनुवृत्ति है। यहां धातोः (5/1), प्रत्ययः (1/1), परश्च (1/1) का अधिकार आता है। लिङो निमित्तं लिङ् निमित्तम्। तस्मिन् लिङ्निमित्ते इतिषाष्ठीतत्पुरूषसमासः। क्रियायाः अतिपत्तिः अनिष्पत्तिः असिद्धः अनभिनिवृत्तिः क्रियातिपत्तिः। तस्याम् क्रियातिपत्तौ इतिषाष्ठीतत्पुरूष समासः। सूत्रार्थ होता है - हेतु हेतुमद्भाव आदि लिङ् के निमित्त कहे गये हैं, उन में विद्यमान धातु से परे लृङ् प्रत्यय होता है।

हेतु हेतुमतोर्लिङ् इत्यादि सूत्रों से लिङ् के प्रयोग के कुछ निमित्त अष्टाध्यायी में कहे गये है। हेतु अर्थात् कारण, हेतुमत् अर्थात् कार्यफल। इस प्रकार हेतु हेतुमद् कारण कार्य (फल) का युग्म होता है। कार्यकारण के युग्म से निर्दिष्ट क्रिया के गुण से अतिपत्ति होती है, तो उस क्रिया वाचक धातु से लृङ् होता है।

उदाहरण -कृष्णम् अनंस्यत् चेत् सुखम् अयास्यत्। सुवृष्टिः चेद् अभविष्यत् तदा सुभिक्ष्यम् अभविष्यत्। दक्षिणेन चेद् आयास्यन् न शकटं पर्यभविष्यत्। अभोक्ष्यत् भवान् घश्तेन यदि मत्समीपम् आगमिष्यत्। गुरुं चेत् प्रणमेत् शास्त्रान्तं गच्छेत्।

सूत्रार्थ समन्वय -कृष्णम् अनंस्यत् चेत् सुखम् अयास्यत् इस उदाहरण में कृष्णनमन हेतु सुखलाभ कार्यफल है। यहां हेतु हेतुभाव कारणफलयुग्म है। परन्तु किसी प्रमाण से ज्ञात होता है कि यह नमन नहीं करेगा तो इसको सुख भी नहीं आयेगा। अतः कारण फलयुग्म से निर्दिष्ट क्रिया की असिद्धि होती है। अतः नम् धातु से और या धातु से लृङ् होता है। इस प्रकार प्रक्रिया से अनंस्यत् और अयास्यत् रूप होते हैं। उनके प्रयोग से वाक्य सिद्ध होता है।

कृष्ण नमेत् चेत् सुखं यायात् में विधिलिङ् का प्रयोग होता है परन्तु यहां क्रियातिपत्ति अभीष्ट नहीं है।

अभिष्यत् - भू धातु से लृङ्, लृङ् का तिप्, स्यतासी लृलुटोः सूत्र से स्य का आगम, आर्धधातुक होने से इट् आगम, होकर भू+इ+स्य+ति, इतश्च से ति के इकार का लोप, लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः से अट् आगम, अ भू+इ+स्यत् इगन्त को गुण तथा अवादि, एवं आदेश प्रत्ययों से सकार कोषकार होकर अभविष्यत् रूप सिद्ध होता है।

अन्य उदाहरणों इसी प्रकार समझना चाहिए।

भू धातु के लृङ् लकार के रूप

लृङ्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
मध्यपुरुषः	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
उत्तमपुरुषः	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

भ्वादिप्रकरण में - भू धातु के लिङ्, लुङ् और लृङ् लकारों में रूप सिद्धियाँ

नीचे कुछ धातुएँ दी गई हैं, उनका रूप इन्हीं के समान कुछ सूत्रों का प्रयोग करके सिद्ध कर सकते हैं।

1. **पठव्यक्तायांवाचि** - अपठिष्यत्, अपठिष्यताम्, अपठिष्यन्। अपठिष्यः, अपठिष्यतम्, अपठिष्यत। अपठिष्यम्, अपठिष्याव, अपठिष्याम।

2. **गद व्यक्तायां वाचि** - अगदिष्यत्, अगदिष्यताम्, अगदिष्यन्। अगदिष्यः, अगदिष्यतम्, अगदिष्यत। अगदिष्यम्, अगदिष्याव, अगदिष्याम।

3. **अर्च पूजायाम्** - अर्चिष्यत्, अर्चिष्यताम्, अर्चिष्यन्। अर्चिष्यः, अर्चिष्यतम्, अर्चिष्यत। अर्चिष्यम्, अर्चिष्याव, अर्चिष्याम।

4. **व्रज गतौ** - अव्रजिष्यत्, अव्रजिष्यताम्, अव्रजिष्यन्। अव्रजिष्यः, अव्रजिष्यतम्, अव्रजिष्यत। अव्रजिष्यम्, अव्रजिष्याव, अव्रजिष्याम।

5. **कटें वर्षावरणयोः** - अकटिष्यत्, अकटिष्यताम्, अकटिष्यन्। अकटिष्यः, अकटिष्यतम्, अकटिष्यत। अकटिष्यम्, अकटिष्याव, अकटिष्याम।

6. **क्षि क्षये** - अक्षयिष्यत्, अक्षयिष्यताम्, अक्षयिष्यन्। अक्षयिष्यः, अक्षयिष्यतम्, अक्षयिष्यत। अक्षयिष्यम्, अक्षयिष्याव, अक्षयिष्याम।

7. **चितीं संज्ञाने** - अचेतिष्यत्, अचेतिष्यताम्, अचेतिष्यन्। अचेतिष्यः, अचेतिष्यतम्, अचेतिष्यत। अचेतिष्यम्, अचेतिष्याव, अचेतिष्याम।

8. **शुच शोके** - अशोचिष्यत्, अशोचिष्यताम्, अशोचिष्यन्। अशोचिष्यः, अशोचिष्यतम्, अशोचिष्यत। अशोचिष्यम्, अशोचिष्याव, अशोचिष्याम।

पाठगत प्रश्न 16.3

1 लुङ् सूत्र अर्थ लिखिए?

2 लुङ् में शबपवाद कौन है?

3 च्लेः सिच् किस लकार में होता है?

4 सिच् में कौन इत्संज्ञक है?

5 अभूत् में सिच् लुक् किस सूत्र से होता है?

6 गातिस्थाकृसूत्र से क्या होता है?

7 अभूत् में सार्वधातुक को गुण किस सूत्र से नहीं होता?

टिप्पणियाँ

8. स्मोत्तरेमाङि किन लकारों में होता है ?

9. न माङ्योगे से क्या नहीं होता?

10. म भवान् भूत् यहां अंग को अट् किस से नहीं होता?

11. क्रियातिपत्ति कौन है?

12. लुङ् में विकरण क्या है?

(अ) शप् (ब) तास् (स) च्लि (द) स्य

13. लृङ् में अंग को क्या नहीं होता है?

(अ) अट् (ब) आट् (स) गुण (द) अभ्यास

14. इनमें से लुङ् का रूप नहीं है?

(अ) अभूताम् (ब) अभूवन् (स) अभूवम् (द) अभूत

15. च्लि के स्थान पर क्या होता है?

(अ) स्य (ब) तास् (स) यासुट् (द) सिच्

पाठ का सार

इस पाठ में लिङ् लुङ् और लृङ् इन तीन लकारों को उपस्थित किया गया है। उनमें से लिङ् के दो भेद विधिलिङ् एवं आशीर्लिङ् होते है। विधि आदि अर्थों में विद्यमान लिङ् विधिलिङ् कहलाता है। विधिलिङ् का मुख्यार्थ प्रेरणा या प्रवर्तना है। विधिलिङ् में तिङ् और शप् विधान होता है। यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च सूत्र से यासुट् का आगम विशेष कार्य है। कहीं पर अतो येय: से यास् को इय् होता है। झेर्जुस् से झि का जुस्, ङितो के इकार लोप, नित्यं ङित:, तस्थस्थमिपां तान्तन्ताम: आदि कार्य होते हैं।

आशीर्वाद अर्थ में आशीर्लिङ् होता है। आशीर्लिङ् में किदाशिषि से यासुट् कित् होने से इग्लक्षणगुणवृद्धि का क्क्ङति च से निषेध होता है।

लुङ् साहित्यकारों का प्रिय लकार है। जो इस लकार का प्रयोग करता है उसकी प्रौढ़ संस्कृत होती है। इसका प्रयोग भूतकालीन सभी क्रियाओं को प्रकट करने के लिए किया जाता है। लुङ् में शप् का अपवाद होकर च्लि, च्लि को सिच् आदि विशेष कार्य हैं। माङ् के प्रयोग में लुङ् सभी लकारों का अपवाद है यदि स्मोत्तर: माङ् प्रयुक्त हो तो लुङ् और लङ् होता है। माङ् के प्रयोग अट् आट् नहीं होते।

क्रिया की अनिष्पति गम्यमान में लृङ् होता है। इसमें शप् का अपवाद स्यतासी लृलुटो: होता है अंग को अट् या आट् होते है।

पाठांत प्रश्न

1. विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् सूत्र की व्याख्या कीजिए?
2. भवेत्, भवेताम्, भवेयुः, भवेयम् भवेम इनको ससूत्र सिद्ध कीजिए?
3. क्ङिति च सूत्र की व्याख्या कीजिए?
4. भूयात्, भूयाताम्, भूयासुः, भूयासम्,भूयास्म इनको ससूत्र सिद्ध कीजिए?
5. लुङ् सूत्र की व्याख्या कीजिए?
6. सार्वधातुकमपित् सूत्र की व्याख्या कीजिए?
7. अभूत्, अभूवन्, अभूत, अभूवम्, अभूम, अभविष्यत्, अभविष्यः, अभविष्यम् इनको ससूत्र सिद्ध कीजिए?
8. स्तम्भों में स्थित सूत्र एवं उसके प्रयोग का मेल कीजिए-

(क) स्तम्भ		(ख) स्तम्भ	
1.	परोक्षे लिट्	(क)	क्रियातिपत्तौ
2.	अनद्यतने लुट्	(ख)	भविष्यति
3.	लृट्शेषे च	(ग)	अनद्यतन भविष्यति
4.	लोट् च	(घ)	भूतसामान्ये
5.	अनद्यतने लुङ्	(ङ)	अनद्यतनपरोक्षभूते
6.	लुङ्	(च)	अनद्यतनभूते
7.	लृङ्	(छ)	विध्यादौ

9. स्तम्भों में स्थित लकार एवं रूप का मेल कीजिए-

(क) स्तम्भ		(ख) स्तम्भ	
1.	लट्	(क)	अभवत
2.	लिट्	(ख)	अभेत
3.	लुट्	(ग)	भूयासम्
4.	लृट्	(घ)	अभूवन्
5.	लोट्	(ङ)	अभविष्यत

टिप्पणियाँ

6.	लङ्	(च)	अभव:
7.	विधिलिङ्	(छ)	बभूविथ
8.	आशीर्लिङ्	(ज)	भवितास्मि
9.	लुङ्	(झ)	भविष्यथ
10.	लृङ्	(ञ)	भवत

10. स्तम्भों में स्थित लकार एवं विकरण का मेल कीजिए?-

	(क) स्तम्भ		(ख) स्तम्भ
1.	लिङ्	(क)	शप्
2.	लृङ्	(ख)	सिच्
3.	लुङ्	(ग)	स्य
4.	लुट्	(घ)	हि
5.	लङ्	(ङ)	अभ्यास
6.	लिट्	(च)	तास्
7.	लोट्	(छ)	यासुट्

11. स्तम्भों में स्थित समान लकारों का मेल कीजिए-

	(क) स्तम्भ		(ख) स्तम्भ
1.	भवत:	(क)	भूयास्त
2.	भविता	(ख)	अभूवन्
3.	भविष्यत:	(ग)	अभवत
4.	भवताम्	(घ)	अभविष्यत
5.	भवेतम्	(ङ)	बभूविथ
6.	भूयात्	(च)	भवथ
7.	अभूत्	(छ)	भवितासि
8.	अभवताम्	(ज)	भविष्याव:
9.	अभविष्यत	(झ)	भवत
10.	बभूव	(ञ)	भवेत

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

16.1

1. आयु, अधिकार या वर्ण से निकृष्ट भश्त्यादि को प्रवर्तन विधि है।
2. अवश्यकर्तव्य प्रेरणा, नियोगकरण हि निमन्त्रण है।
3. कामचारानुज्ञा हि आमन्त्रण है।
4. सत्कारपूर्वक व्यापार हि अधीष्ट है।
5. विचार का निर्धारण हि संप्रश्न है।
6. विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्।
7. अतो येयः सूत्र से यास् को इय् होता होता है।
8. लिङ्। 9. 2 10. 1 11. 1

16.2

1. किदाशिषि।
2. आशिषि।
3. अदन्त अंग परे सार्वधातुक के अवयव को इय् किया जाता है लिङाशिषि से सार्वधातुक होने से प्रवृत नही होता है।
4. लिङाशिषि।
5. आशिष में लिङादेश तिङलिङाशिषि से सार्वधातुकसंज्ञक होता है।
6. 1 7. 1 8. 4 9. 1

16.3

1. भूतार्थ में लुङ् हो।
2. च्लि।
3. लुङ् में।
4. इचौ।

5. गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु।

6. गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः का लुक होता है परस्मैपद परे हो।

7. भुवो वग् लुङ्लिटोः सूत्र से निषेध होता है।

8. लङ् और लुङ्।

9. अट् व आट् नहीं।

10. माङ् योगे सूत्र से अट् नही होता है।

11. क्रियायाः अतिपत्तिः अनिष्पत्तिः असिद्धः अनभिनिवृत्तिः क्रियातिपत्तिः।

12. 4   13. 4   14. 2   15. 4।